Q. Write a short notes on Dantidurga.

Ans:→ दन्तिदुर्ग :→ दन्ति दुर्ग राष्ट्रकूट वंश का महा प्रतापी राजा था जो अपने पिता इन्द्र प्रथम के मरने के बाद सिंहासन पर बैठा। वह बड़ा पराक्रमी तथा दूरदर्शी शासक था। राष्ट्रवंश की स्वतंत्रता तथा महत्ता की स्थापना सबसे पहले इसी ने की।

दन्ति दुर्ग ने सिंहासन पर बैठते ही तत्कालिन राजनीतिक परीस्थिति का अध्ययन किया और एक निश्चित योजना के आधार पर उससे पूरा-पूरा लाभ उठाया। सिन्ध के मुस्लिम शासकों के निरन्तर आक्रमणों ने गुजरात और मालवा के राज्यों को निर्बल बना दिया था। चालुक्यों और पल्लवों के पारस्परिक वैमनस्य से दोनों ही राज्य अशक्त हो रहे थे। दन्ति दुर्ग ने इस स्थिति का योग्यता पूर्वक उपयोग किया। यही नहीं पल्लव वंश के भीतर होने वाले गृह युद्ध ने भी उसे पल्लव राजनीति में प्रवेश पाने का अवसर प्रदान किया। दन्ति दुर्ग ने उस अस्थिर वातावरण में अनेक नीतियों से काम लिया। अपनी कूटनीतिक सन्धियों प्रति सन्धियों एवं अभियानों की सहायता से दन्ति दुर्ग ने अपने पिता के समस्त राजा को धीरे-धीरे एक विशाल राज्य में परिवर्तित कर दिया।

प्रारम्भ में दन्ति दुर्ग अपने पिता की भांति चालुक्य नरेश का सामन्त था। 742 ई० के एलोरा के लेख में उस एक मात्र महासामन्ताधिपति कहा गया है। 745 ई० में चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय की मृत्यु हो गयी। इस स्थिति के पश्चात दन्ति दुर्ग ने अपनी स्वतंत्रता घोषित की होगी। 745 ई० के समंगढ़ लेख में उनके लिये महाधिराज की उपाधि का प्रयोग किया गया है।

दन्ति दुर्ग ने प्रमुखतया निम्नलिखित राज्यों के विरुद्ध सफलता प्राप्त की थी। यह भी सम्भव है कि इनमें से कुछ युद्ध उसने चालुक्य नरेश के सामन्त के रूप में लड़े हो।

सिन्ध :→ 738 ई० के लगभग चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय और पुलकेशी ने सिन्ध के अरबों के विरुद्ध युद्ध किया। इसमें दन्ति दुर्ग ने भी भाग लिया। इसमें अरबों की भारी पराजय हुई और भविष्य में उसने फिर कभी गुजरात पर आक्रमण नहीं किया। दन्ति दुर्ग की सहायता को स्वीकार करते हुए चालुक्य नरेश ने दन्ति दुर्ग को "पृथ्वी वल्लभ" की उपाधि दी।

कोशल :→ अनेक अभिलेखों से प्रगट होता है कि दन्ति दुर्ग ने कोशल नरेश उदयन को पराजित किया था। उधर उदयेन्दिरम ताम्रपत्रों का

Scanned with CamScanner

कथन है कि पल्लव नरेश नन्दी वर्मा द्वितीय ने भी उदभग को पराजित किया और उसे बन्दी बना लिया था। इन दो प्रकार के कथनों के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि दन्ति दुर्ग और नन्दिवर्मा द्वितीय ने सम्मिलित रूप से कोशल नरेश को पराजित किया था। दुब्रिआ महोदय के मत है कि दन्ति दुर्ग ने पल्लव नरेश के साथ सन्धि ही नहीं की थी वरन् उसके साथ अपनी पुत्री शंखा का विवाह भी कर दिया था। परन्तु विवाह के पक्ष में निश्चित प्रमाण नहीं मिलते। वेहुर ताम्रपत्रों का यह कथन अवश्य है कि शंखा राष्ट्रकूट राजकुमारी थी और उसका विवाह नन्दीवर्मा के साथ हुआ था। परन्तु यह शंखा राष्ट्रकूट नरेश दन्ति दुर्ग की पुत्री थी ऐसा कहीं नहीं लिखा हुआ है। पुनः वेहुर ताम्रपत्रों में उल्लिखित दन्ति दुर्ग वर्मा, दन्ति वर्मा का पुत्र था। जबकि दन्ति दुर्ग का समकालीन पल्लव नरेश नन्दिवर्मा द्वितीय परमेश्वर वर्मा अथवा हिरण्य का पुत्र था

(3) **मध्य प्रदेश** :→ यहाँ बाला घाट के आस पास के प्रदेशों में शैल वंश के राजा जयवर्द्धन ~~सकलविन्ध्याधिपति~~" प्रथम राज्य करता था। रघोली ताम्र-पत्रों में इसे "परमेश्वर महाराजाधिराज, सकलविन्ध्याधिपति" कहा गया है। उदयेन्दिरम ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि इसने अश्वमेध यज्ञ करने का आयोजन किया था। इसे भी दन्ति दुर्ग और पल्लव नरेश नन्दिवर्मा द्वितीय सम्मिलित रूप से पराजित किया था।

(4) **कॉंची** :→ यहाँ पल्लव नरेश परमेश्वर वर्मा का राज्य था। नन्दिवर्मा उसका पुत्र न था। सम्भवतः वह राष्ट्रकूट की उपशाखा का राजकुमार था और उसने बलात् परमेश्वर वर्मा अथवा उसके किसी उत्तराधिकारी से राज्य छीन लिया था। सम्भवतः दन्ति-दुर्ग ने पल्लवों के इस गृहयुद्ध में भाग लेकर नन्दिवर्मा की सहायता की थी। यही कारण है कि दशावतार गुहा लेख में दन्ति दुर्ग को कॉंची नरेश का विजेता कहा गया है।

(5) **चालुक्य राज्य** :→ सिन्ध के मुस्लिम राज्यों के निरन्तर आक्रमणों के परिणाम स्वरूप चालुक्य राज्य निर्बल हो गया था। दन्ति दुर्ग ने इस निर्बलता से लाभ उठाकर उठाया और धीरे-धीरे चालुक्य राज्य के अधिकांश प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। सर्व प्रथम उसने चालुक्यों के अधीन लाट और सिन्ध प्रदेशों को हस्तगत किया और अपने भतीजे कर्क द्वितीय को अपना गवर्नर नियुक्त किया। इसके पश्चात उसने सम्पूर्ण महाराष्ट्र को जीता। समंगद आदि लेखों में उसके द्वारा वल्लभ की पराजय का उल्लेख है। इस विजय से दन्ति दुर्ग के हाथ में खानदेश, नासिक, पूना, सतारा और कोल्हापुर के जिले आ गये। अब चालुक्य राज्य बादामी के आस पास के प्रदेश पर ही रह गया

Scanned with CamScanner

(6) उज्जैन :→ यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश का राजदेव राज का राज्य था। सम्भवतः दन्ति दुर्ग ने उसे पराजित किया। संजन ताम्रपत्रों का कथन है कि दन्तिदुर्ग ने उज्जैन में हिरण्यगर्भदान किया था। उस समय गुर्जरनरेश उसका प्रतिहार बना था।

(7) कुछ अन्य अभिलेखों से दन्ति दुर्ग की कलिंग की शैल और टंक प्रदेशों की विजय भी सिद्ध होती है। समंगढ़ ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि उसकी सेनाओं ने अही, महानदी और रेवा नदियों की घाटियों में युद्ध किये थी। दशावतार गुहालेख में श्री महाराज शर्व की लाट, मालवा, वदामी, सिन्धु आदि प्रदेशों के विजयों का वर्णन है। इसमें यही नहीं कहा गया है कि यह शर्व कौन था। कीलहर्न महोदय का मत था कि यह सर्व राष्ट्रकूट वंश का राजा अमोघवर्ष था परन्तु डा० अल्तेकर ने इसका खण्डन किया है। वे शर्व को दन्ति दुर्ग मानते हैं। इस दशावतार लेख में दन्ति दुर्ग पराजित, सिन्धु भूप का उल्लेख है। वस्तव में इसे सिन्धु-भूप समझना चाहिये।

अपनी अनेक विजयों के परिणाम स्वरूप दन्तिदुर्ग ने महाराजाधिराज परमेश्वर और परमभट्टारक की उपाधियाँ धारण की थी। उसकी मृत्यु (लगभग 738ई०) के समय राष्ट्रकूट राज्य एक विशाल एवं शक्तिशाली राज्य बन गया था।

दन्ति दुर्ग ब्राह्मण धर्मावलम्बी था। उज्जैन में उसने जो हिरण्यगर्भदान किया था वह इस कथन का प्रमाण है। इस अवसर पर उसने एक सप्तमी के दिन अपने को सोने से तोलवाया और उसने उस सोने को ब्राह्मणों में बाँट दिया। समंगढ़ ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि उसने अपनी राजमाता के इच्छानुसार अनेक भूखण्ड ब्राह्मणों को दान दिये थे।

— x — x —